ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292RNI
REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 135-136**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-III, Issues-33, YEAR-July-Sept. 2024

लोक रक्षक राम के मानवीय सिद्धान्तः आधुनिक परिप्रेक्ष्य में

डॉ0 लक्ष्मी वर्मा

सहायक आचार्य– हिन्दी विभाग, महाराणा प्रताप महिला पी०जी० कॉलेज, रामदत्तपुर, गोरखपुर (उ0प्र0) भारत

Received-15.07.2024, Revised-21.07.2024, Accepted-26.07.2024 **E-mail : lakshmiverma3696@gmail.com**

सारांशः "भय प्रगट कृपाला दीन दयाल कौशल्या हितकारी"[1] रामचरितमानस की यह पंक्ति हताश और निराश ह्रदय में आशा का संचार करने वाली है। मध्यकालीन कवि तुलसीदास के मुख से राम नाम का स्पंदन जाहिर करता है मध्यकाल के संत्रस्त जनसमूह को। पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ जनमानस लोक मंगलकारी राम के चरित का गुणगान गाकर अपने मन को सांत्वना प्रदान करने का कार्य करता है।

कुंजीभूत शब्द–मानवीय सिद्धान्त, हताश और निराश, आशा और संचार, पराधीनता, जनमानस, लोकमंगलकारी, स्पंदन

तुलसी दास युगीन परिस्थितियों से आहत् राम नाम का जप करते हुए कहते हैं–

"राम नाम के जपे जाई जिय की जरनि,
कलिकाल अपर उपाय ते अपाय भये,
जैसे तम नासिबेको चित्र के तरनि।।"[2]

राम वास्तव में माननीय स्वरुप में दिखने वाले कौशल्या के राम ही नहीं अपितु समूचे जन–मन की आस्था के रूप में अभिव्यक्त होते हैं। उनका धनुष–बाण लिए हुए लोकमंगलकारी स्वरूप के दर्शन मात्र से आवागमन के चक्र से मुक्त हो जाने का अद्भुत विश्वास जनमानस में दिखाई पड़ता है– रघुवर–रूप बिलोक नेक, मन।

"सकल लोक– लोचन सुखदायक, नखशिख सुभग श्याम सुंदर तन।"[3]

देखा जाये तो श्रीराम अपने जीवन में तमाम संकटों का सामना करके एक प्रकार की सीख का संदेश देते हैं–संदेश मर्यादा का पालन करने का, संदेश दृढ़ विचारों का, संदेश परमार्थ सेवा का। एक तरफ राम का कोमल स्निग्ध भाग और दूसरी तरफ संकल्प की दृढ़ इच्छाशक्ति राम के व्यक्तित्व को संवारती है। मानवीय देह धारण कर एक सामान्य से जीवन को भी विशेष बनाने का कौशल दिखाई पड़ता है। डॉ. श्रीधर का कथन है– "वाल्मीकि रामकथा को पढ़ने से यह प्रतीत होता है कि वाल्मीकि राम को ऐतिहासिक पुरूष के रूप में अनुभव करते हैं। वाल्मीकि स्वंय कथा के अंग हैं वे राम के समकालीन हैं, ऐसी स्थिति में उन्होंने रामकथा को मानवीय एवं यथार्थ रूप से ही व्यक्त किया है।"[4]

राम के जीवन का दुःख–सुख मानवीय संवेदना के मूल भाव को व्यक्त करती है, सीता के वाटिका में प्रथम दर्शन से श्रृंगार का जो उदात्त भाव प्रकट होता है वह राम के सच्चे अनुराग का ही परिचारक है; सीता हरण के पश्चात् रावण से लगातार युद्ध करते हुए शिथिलता के जिस क्षण में उन्हें जानकी का स्मरण होता है वह उनके प्रथम मिलन का ही है। कवि निराला कहते हैं–"ऐसे क्षण अंधकार घन में जैसे विद्युत, जागी पृथ्वी–तनया– कुमारिका– छवि, अच्युत,

देखते हुए निष्पलक, याद आया उपवन,
विदेह का प्रथम–स्नेह का लतान्तराल मिलन।।"[5]

सीता के स्मरण मात्र से राम के मन में जो बिम्ब उपस्थित होता है। वह उनमें अद्भुत शक्ति, पराक्रम व तेज के रूप में प्रतिफलित होता है। शक्ति की अराधना में सफल हुए राम के सम्मुख मां भगवती जब कहती हैं–

"होगी जयच, होगी जय, हे पुरूषोत्तम नवीन।
कह महाशक्ति राम के वदन में हुई लीन।"[6]

कहा जा सकता है कि वनवास से लेकर रावण से राम की विजय यात्रा राम के जीवन का संघर्षरत क्षण है; परन्तु ऐसे में राम की गति धीमी नहीं पड़ती अपितु द्रुतगति से विस्तार पाती है। यही नहीं राम के सिद्धान्त संघर्ष तक ही नहीं सीमित हैं बल्कि वैचारिक धरातल पर राम सत्यता और श्रेष्ठता को भी अपनाते हैं। रावण की मृत्यु पर राम ने रावण (राक्षस) का बहिष्कार नहीं किया बल्कि उसके श्रेष्ठ ज्ञान को ग्रहण करने की बात कही–

शुभ कार्य को तुरन्त और अशुभ कार्य को टाल देना चाहिए। अपने शत्रु को कभी अपने से छोटा नहीं समझना चाहिए। अपने राज की बात किसी को नहीं बताना चाहिए।

तुलसीदास कहते हैं–

"श्री रघुवीर की यह बानी, नीचहू सो करत नेह सुप्रीति मन अनुमानी।।
परम अधम निषाद पावर, कौन ताकि कानि, लियो सो उर लाई सुत ज्यों प्रेम को पहिचानी।।"[7]

राम ने अपने आचरण से ज्ञान और कर्म की प्रतिष्ठा की। राम के मर्यादापालक स्वरूप की चर्चा युगों–युगों से चलती आ रही हैं। मध्यकाल में राम भक्त कवियों द्वारा राम के लीलानन्द स्वरूप की स्थापना उनके शक्ति, शील, सौन्दर्य का सजीव व साकार प्रस्तुति कलिकाल में व्याप्त व्यभिचार को ध्वस्त करने के उद्देश्य मात्र से हुआ। भक्ति कालीन कवियों ने मानव में नैतिकता के बीज को पुनः पल्लवित करने का आधार राम के चरित्र को माना। अतएव राम भारतीय संस्कृति के नायक के रूप में अभिव्यक्त हुये। राम की विचारधारा केवल दीन–दुखियों की सेवा मात्र तक नहीं अपितु उनके प्रति उचित न्याय का भी है।

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-III, Issues-33, YEAR-July-Sept. 2024

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में राम का चिन्तन–मनन आत्मा और परमात्मा के दृष्टिकोंण से न होकर उनके सिद्धान्त के अनुसरण से होना चाहिए। पारिवारिक स्तर से देखा जाये, तो त्याग, कर्तव्य परायणता एवं धैर्य का समन्वित रूप राम में दिखाई देता है। बाल्यकाल में ही वे पिता की आज्ञा पाकर ऋषि विश्वामित्र के साथ चल पड़ते हैं तथा असुरों के तांडव से जीवों को मुक्त कराते हैं। उत्तराधिकारी के रूप में राज्याभिषेक होने के उपक्रम में माता कैकई द्वारा 14 वर्षों तक वन गमन का आदेश पाते ही तपस्यी का वेश धारण कर पत्नी सीता को साथ लेकर चल पड़ते हैं, ऐसे में पिता की मृत्यु का संदेश पाकर वन में पुत्र धर्म का पालन भी करते हैं। पारिवारिक संवेदना के क्षण में राम धैर्य से कभी विमुक्त नही होते। रावण द्वारा सीता हरण के पश्चात् उनके ह्रदय का करूण स्वर सीता को मुक्त करने व रावण का वध करने के दृढ़ निश्चय में प्रतिफलित होता हैं।

हिंदी साहित्य के कवियों ने विविध रूपों में राम की गाथा सुनाई है और यही नहीं गद्य क्षेत्र में भी साहित्य प्रेमियों ने राम के चरित्र का आदर्श रूप प्रतिस्थापित किया है। कथा सम्राट प्रेमचंद ने अपने रचना संसार में राम के व्यक्तित्व से सीख लेने की बात कही है। वे कहते हैं– "बच्चों! तुम भी कर्तव्य को प्रधान समझो! कर्तव्य से कभी मुंह न मोड़ो। यह रास्ता बढ़ा कठिन है। कर्तव्य पूरा करने में तुम्हें बड़ी–बड़ी कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा किन्तु कर्तव्य पूरा करने के बाद तुम्हें जो प्रसन्नता प्राप्त होगी वह तुम्हारा पुरस्कार होगा।"[8]

देखा जाए तो राम ने अपने सम्पूर्ण जीवन के प्रत्येक पड़ाव का सामना किया है और संघर्ष किया है। राम के सिद्धान्त मानव जीवन के वास्तविक सिद्धान्त हैं। आज के युग में मनुष्य अपने सिद्धान्तों से भटकता जा रहा है। समाज के जिस डांवाडोल दिनचर्या में वह जीता है;उसका सिर्फ और सिर्फ एक ही कारण है कि मनुष्य के स्वयं के विचारों का पतन।

आधुनिक काल के तमाम कवियों एवं लेखकों ने सामाजिक व्यवस्था के प्रति अपनी लेखनी को समृद्ध किया है। पंडित श्रीधर पाठक अपनी कविता 'एकांतवासी योगी' में कहते हैं– "उसी भांति सांसारिक मैत्री केवल एक कहानी है,

नाम मात्र से अधिक आज तक नहीं किसी ने जानी है।
जब तक धनसंपदा, प्रतिष्ठा अथवा यश विख्याति है,
तब तक सभी मित्र, शुभचिंतक, निजकुल बान्धव जाति है।" [9]

मानव के भीतर जीवन मूल्यों की नगण्यता का कारण वह स्वयं है। मानवीय सिद्धान्त से विमुख होकर उसने अपने अस्तित्व को खतरे में डाला है। उसका आत्मसम्मान ही उसका आत्मसंबल है। अतः रामभक्त कवियों ने काम, क्रोध, लोभ, मोह का त्याग एवं इंद्रियों को वश में करने पर विशेष बल दिया क्योंकि अनैतिक विचारधाराओं से ही समाज की मानवीय मूल्य व्यवस्था टूटती है; ऐसे में रामभक्त कवियों द्वारा राम के मानवीय सिद्धान्त की पुनरावृत्ति की जाए तो परिवार व समाज के हित में होगा। इसके लिए मानव की प्रारम्भिक शिक्षा को माध्यम बनाया जा सकता है और वह है उसका परिवार।" भारतीय संस्कृति के उपासक के रूप में तुलसीदास जी सामाजिक जीवन की पूर्णता हेतु नैतिकपूर्ण पारिवारिक जीवन को सुयोग्य माना है क्योंकि बालक सर्वप्रथम पारिवारिक वातावरण में ही अपने प्राथमिक गुणों का विकास करता है। यदि परिवार नैतिक, मर्यादित, सुसंस्कृत नहीं रहता है तो बालक अनैतिक एवं विश्रृंखल हो जाता है। तुलसीदास ने श्री राम के परिवार को आदर्श परिवार के रूप में प्रस्तुत किया है तथा उनके आदर्शों को अपनाने पर बल दिया है।"[10]

इस प्रकार तुलसीदास ने रामकथा के ओज और माधुर्य को जनमानस के धरातल पर उतार कर सुसंस्कृत एवं समृद्ध समाज की कल्पना की तथा उनके बाद के कवियों ने भी इस परम्परा को और भी समृद्ध करने का प्रयास किया। जिसके लिए काव्य ग्रंथों की शुरुआत में मंगलाचरण एवं स्तुति के रूप में राम को याद किया गया। "वस्तुतः रामावत संप्रदाय में राम भक्ति को जो गौरवशाली स्थान प्राप्त है वह किसी अन्य संप्रदाय में नहीं है। रामावत संप्रदाय के प्रवर्तक स्वामी रामानंद ने भक्ति के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन किए और राम की मर्यादा भक्ति को आदर्श और आचरण की पवित्रता से मंडित रखते हुए जनसाधारण के लिए सुगम बनाया।"[11] स्पष्ट है कि भेदभाव रहित समतामूलक विचारधारा से राम नाम की भक्ति का उद्देश्य मानव मूल्य की प्रतिष्ठा है; जिसके माध्यम से मानव की सोई हुई ऊर्जा और शक्ति को जगाया जा सके ताकि वह स्वयं के अस्तित्व की रक्षा कर सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. तुलसीदास, रामचरितमानस (बालकांड), प्रकाशन संस्थान– गीता प्रेस गोरखपुर, प्रकाशन वर्ष 2071 पृष्ठ संख्या 161.
2. तुलसीदास, विनय पत्रिका, गीता प्रेस गोरखपुर, पृष्ठ संख्या– 294.
3. उपरोक्त, पृष्ठ संख्या– 406.
4. मिश्र डॉ० श्रीधर, रामकथा पर आश्रित लघु काव्यों की समीक्षा, वैशाली प्रकाशन, बक्शीपुर गोरखपुर, पृष्ठ संख्या–45.
5. निराला, सूर्यकांत त्रिपाठी, शर्मा रामविलास (सम्पादक) राग विराग, शीर्षक–राम की शक्ति पूजा, लोक भारती प्रकाशन, महात्मा गांधी मार्ग, संस्करण 2012 पृष्ठ संख्या–94.
6. तुलसीदास, विनय पत्रिका, गीता प्रेस गोरखपुर, पृष्ठ संख्या–397.
7. प्रेमचंद, रामकथा (राम चर्चा) जयपुर, प्रथम संस्करण 1092 पृष्ठ संख्या– 131.
8. गुलाब राय, प्रोफेसर विश्वनाथ अरुण (संपादक) हिंदी साहित्य का सुबोध इतिहास, आगरा 54वां पुनःमुद्रित संस्करण 2013, पृष्ठ संख्या– 203.
9. चौधरी, डॉ० रूक्मिणी, भक्ति साहित्य में वर्णित शैक्षिक विचारों का अध्ययन, राधा पब्लिकेशन, दरियागंज नई दिल्ली प्रथम संस्करण 2017 पृष्ठ संख्या– 102.
10. डॉ० नगेंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नोएडा 24वां पुनमुद्रित संस्करण पृष्ठ संख्या–186

*****